(so ed. Bomb.) MBn. 4,1610. - Vgl. परिश्रत.

— प्र med. 1) gehört wetden, sich hören lassen: प्र ये द्वा बृंक्तः शृंगिव्रे हर. 5,87,3. — 2) bekannt werden: अवीभिः स प्र शृंगवे हर. 4, 41,2. प्रारुं मुक् वृंत्रकृत्ये अर्थुस्रवि 10,48,8. 7,8,4. — Vgl. प्रस्रवस् (hier-her oder प्र + 平).

— স্থানিস med. vor Andern bekannt werden RV. 10,11,7.

- प्रति 1) antworten; bejahen, zusagen, versprechen (mit acc. der Sache und dat. [auch gen.] der Person P. 1, 4, 40. Vop. 5, 15) AV. 9,6, 50. स यामेनि प्रति स्थि RV. 1,15,20. ÇAT. BR. 1,4,4,10. 12. 18. 11,4, 1,8. 14,9,1,1. ब्रष्ट हैनमृषभा ४भ्युवाद् सत्यकाम३ इति भगव इति रू प्रति-मुम्राव Кылы. Up. 4,5,1. इति पृष्टा प्रतिशृषोति प्रत्याचष्टे वा Çлакн. Çв. 5,1,10. 10,13,17. MBs. 1,714. 3,2175. यो न दखातप्रतिसृत्य 13,405. 415. 2763. 3177. HARIV. 13843. R. 1,16,8. 2,98,5. R. GORR. 2,23,21. 89, 1. Ragn. 2, 65. 3, 67 (° प्रम्यवान्). 12, 69. 14, 29. 15, 4. Катийя. 24, 126. SADDH. P. 4, 17, a. BHAG. P. 6,7, 38. 8,19, 3. सत्यम् MBH. 3,2964. R. 2,98,3. \$,81,10. कान्यकाम् Katelis. 14,79. प्रतियुत zugesagt, versprochen H. 1489. प्रतियते जुलाति nachdem die Zusage erfolgt ist Çanku. Gans. 1,7. 9. 3,10. यञ्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम् उद्गर्धः. २,175. राजपुत्र्याः प्रतिश्रुतम् MBa. 4,456. 1610 (nach der Lesart der ed. Bomb.). वाचा 5,211. R. 2, 88, 22. R. Gorn. 2, 17, 19. 3, 14, 18. 5, 47, 9. Kumaras. 2, 56. Ragh. 15, 74. Mâlav. 8,17. Kathâs. 26,187. 119,4. Râga-Tar. 1,242. 4,56. Bhâg. P. 1,7,38. 14,40. 2,7,18. 3,23,51. 6,18,42. कुरु प्रतिश्वतं सत्यम् 1,7,54. MBs. 5,7032. श्राब्बस्य सुता नगर्वासिनः । त्रत्कृते याचितास्माभिः सा च पित्रा प्रतिश्वता ॥ KATHÁS. 61,19. सा च पित्रा दातुं प्रतिश्वता 123,166. यथेष्टमशनं दातुं तता उनेन प्रतिश्रुते Riéa-Tan. 1,132. n. Zusage, Versprechen: सत्य° adj. R. 3,41,18. म्रिनिस्तीर्पा° adj. Buis. P. 10,89,45. - 2) प्रतिश्रुत wiederhallend: तथा तयार्गरायेथिरिश: सर्वा: प्रतिश्रुता: R. 7,32,55. — 3) hören, vernehmen: तद्वीरु मया सर्वे प्रतियुतम् (परियु-तम् ?) R. 6,9,6. — 4) प्रतियतं genannt Hanv. 1937 feblerbaft für परि-श्रुत, wie die neuere Ausgabe liest. — Vgl. प्रतिश्रव fgg. — desid. ेप्र-मूपति (nicht med.) P. 1,3,59. Vop. 23,57.

— संप्रति zusagen, versprechen: यो ऽस्मन्यं संप्रतियुत्य कन्यार् तं वि-गर्क्ष नः । कृषायादात् Buic. P. 10,57,4. — caus. Jmd veranlassen eine Zusage zu machen, Jmd ein Versprechen abnehmen R. 2,107,5.

— वि 1) vernehmen, hören: काणी-यां भूरि विमुवम् Taitt. Up. 1,4,1. शङ्कराब्द् विभुम्रुवु: Hariv. 13577. Bule. P. 1,5,26. 28. °मुत्य 4,8,70. pass.: इति च। व्यम्यस महाघोरा: शब्दास्तत्र समस्त: MBB. 1,1175. 4, 805. Hariv. 13212. R. 1,13,13. Vet. in LA. 21,1. स्वना विभुम्रुवे R. 2, 103,48. — 2) mod. (ved.) und pass. bekannt —, berühmt werden RV. 4,8,6. Vilakb. 6,6. वि मृणुषा ब्रनेषु TBB. 2,4,8,4. विम्रावि RV. 10, 93,14. विम्र्यस्व स्वकर्मणा MBB. 5,4506. व्यम्र्यस नाम त्रिदिव ऽपि यस्य Raeb. 18,9. Spr. (II) 1928. — partic. विम्रुत mit मिणा u. s. w. componirt gaṇa कृतादि zu P. 2,1,59. 1) vernommen, gehört AV. 15,2,4. Spr. (II) 1363. — 2) bekannt, = द्वात H. a b. 3,296. fg. Viçva im ÇKDB. स्थि। कि चपला नित्यं देवानामिप विम्रुतम् Spr. 3303. इत्येव नाम तस्याथ विम्रुतम् MBB. 1,2367. Verz. d. Oxf. H. 235,a,4. विम्रुतस्त्रिषु लोकेषु केाधात्मा स्रत एकपात् bekannt als Hariv. 13634. Paab. 8,9. भावर्धनस्ययि के। ऽपि न विम्रुत: Gir. 1,4. महामामित (°वामिति?) विम्रुता ऽपि

MAITRIUP. 2,1. शतद्रिति विद्युता bekannt als so v. a. genannt MBu. 1,6753. 3,1767. 2124. 2443. 2694. 2900. 13,2583. R. 1,51,19. 2,50,18. 110,8. KATHAS. 7,40. 13,54. PRAB. 9,10. BHAG. P. 3,21, 8. 4,1,1. 9,6. 11. तता पमलं तव देव विश्वतम् so v. a. daher wirst du Jama genannt MBH. 3,16781. weithin bekannt, berühmt AK. 3,1,9. H. 1493. H. an. RV. 1,52,11. 62,1. MBH. 3,2442. R. 2,54,38. 71,9. 3,53,82. 5,1,31. Ragu. 8, 76. Spr. (II) 756. Varin. Bru. S. 26, 5. Врн. 20 (18), 6. विश्वज Катная. 20, 187. Daçak. 59, 10. Bhag. P. 4, 15, 25. जेलाका 3, 33, 31. R. 1,1,47. n. Berühmtheit Bulg. P. 1,5,40. — 3) frok (表智, 并表智) H. an. und Viçva a. a. O. — Vgl. विद्याव, विद्युत, 1. विद्युति, ली-कवियत (auch MBs. 4, 362. 5, 5945), विश्व°. — caus. 1) hören lassen, verkünden, mittheilen: इत्येवं वाचा व्याप्रावयन् R. 6,70,58. मपा विद्या-विते वाक्ये MB#.5,4971. गुर्ह्या मिथा विद्यावयत्ति 12,3819. नामानि Verz. d. Oxf. H. 195, a, 19. नाम विद्याव्य चात्मनः seinen Namen nennend MBu. 4,1653.1785. 1,6287. HARIY. 9242. R. 3,59,5. 5,38,41. 53,1. 6, 76,15. 7,22,49. 23,52. mit acc. der Person: मननी च तवं विमावयञ्जगत् so v. a. so dass es alle Welt hörte MBH. 14,2025. Buig. P. 10,64,44. mit doppellem acc. Jmd Etwas mittheilen: मम कर्म च देवेन्द्रं (देवेन्द्रे Амб. 10, 69) मातलिर्विस्तरेण तत्। सर्वे विश्रावयामास यथाभतम्॥ мвн. 3,12265. fg. — 2) berühmt machen: नाम विद्यावितं भ्व Hariv. 4857. R. 7,33,16. — 3) erschallen machen: डुन्डुभिम् MBu. 6,1628. तता ऽत्त-रीते वागासीत्सर्वा विद्यावयन् (statt °द्यावयत्ती) दिश: 3,16556.

— 短州河, partic. ⁹契八 bekannt als, genannt: 表表现在中科河契八: (nicht voc., wie man wohl anzunehmen pflegt, sondern nom. mit auch sonst im Epos vorkommender Contraction) MBH. 1,1275. 2718. 3219. 3,8760. Harr. 812. 8982. 14917. R. 1,45,38 (46,28 Gorn.). 2,55,7 (5 Gorn.). 110,35 (119,32 Gorn.). R. Gorn. 1,26,10. Mirr. P. 46,43. Buis. P. \$1,21. \$,15,13.

— सम् 1) vernehmen, hören: संज्ञ्जात Paab. 103,19. गदता निगमं मम Вийс. Р. 6,5,30. समग्रीषं वच: МВн. 1,1626. संश्र्णाति न चाक्तानि Внатт. ठ, १९. के क्राष्ट्रन्समाण्योत्वकूरावसते। ऽशुभशंसिनः ६, इ. प्नः संश्र्त्य संश्रुताम् (वाचम्) Јаск. 3,150. 12. म्राक्रन्ट्माना संमृत्य мвн. 3,2388. र्यघोषम् 13,1978. R. 5,55,8. मन्मुखात् Райкав. 4,2,15. यदि वास्ति लिभिप्रायः संग्रातुं तन R. 7,35,18. med.: संग्र्याघ Buarr. 8,16 (falschlich auf P. 1, 3,29, Vartt. 2 und Vop. 23,14 verwiesen). क्तिन य: संप्राप्त Spr. 3085. sich vernehmen P. 1,3,29, Vartt. 2. Vop. 23,14. पंदीव मिष्ट: संज्ञ-एवीरन् Çanke. Ba. 9,1. pass.: यथा संम्र्यते wie man hört, liest MBs. 12, 7159. तं रि संप्र्यसे उत्पर्धमसन्धवलविक्रमः so v. a. du bist, wie man hört, 8,4794. यस्मिन्संभ्रूयते सत्यं ज्योतिर्श्वत्य सनातनम् worin, wie man hört, enthalten sein soll 1,30. संयुत vernommen, gehört Jién. 3,150. МВн. 5,1268. न दर्छ न च संस्त्तम् Spr. (II) 5018. Мілк. Р. 100,17. fg. सनत्कुमाराहचनमिति वे संयुतं मया R. Gonn. 1,8,29. पुराषो संयुता मया so v. a. gelesen MBH. 1, 2546. — 2) zusagen, versprechen: मातामके स-मग्रीषित्राज्यप्रुत्त्कम् स. 2,107,3. किर्ष्य इति संग्रुत्य पूर्वमस्मासु мвн. 3, 2148. तथिति संयुत्य गमनं तस्य R. 1,10,22 (23 Gors.). 23,8. 2,21,41. तपस्विभ्यः सच्चे यज्ञद्विणाम् 75,24. R. Gorn. 2,18,48. 3,14,18. fg. 67, 21. Spr. (II) 612. LA. (III) 91,11. संयूत zugesagt. versprochen AK. 3,2, 58. H. 1489. MBu. 14, 1667. R. 3, 14, 17. 6, 8, 23. 7, 76, 12 (mit gen.